डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No- 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक– 30 मार्च, 2020)

हिन्दी साहित्य के इतिहास में काल विभाजन

हिन्दी साहित्य के इतिहास में काल विभाजन की एक बड़ी समस्या हिन्दी साहित्य के उद्‌भव के निष्चित समय को लेकर है। कुछ इतिहासज्ञ इसे बौद्ध–सिद्धों के साहित्य से मानते हैं और वे इसका समय आठवीं षताब्दी से बताते हैं। कुछ विद्वान हिन्दी साहित्य के उद्‌भव का समय 10वीं और 11वीं षताब्दी से मानते हैं। यहां ध्यान देने की बात यह है कि 'हिन्दी साहित्य' और 'हिन्दी भाषा' का उदय एक साथ नहीं माना जा सकता है। क्योंकि हिन्दी भाषा का प्रयोग अनेक प्राकृत और अपभ्रंष रचनाओं में भी फुटकर रूप में मिलता है। इस फुटकर प्रयोग के कारण हम उन रचनाओं को हिन्दी की रचना नहीं मान सकते हैं। कायदे से हिन्दी साहित्य का उदय उस रचना से माना जाना चाहिए, जो पूर्णतः हिन्दी भाषा में लिखी गयी हो। इस दृष्टि से देखा जाय तो बौद्ध–सिद्धों की रचनाओं को हम हिन्दी साहित्य की श्रेणी में नहीं रख सकते। बौद्ध–सिद्धों के बाद नाथपंथ के साहित्य, मराठी भाषा के संत नामदेव की हिन्दी रचनाएं और रासो काव्य पूर्णतः हिन्दी भाषा में लिखी गयी रचनाएं हैं, जिसे हम हिन्दी साहित्य के उदयकालीन रचना कह सकते हैं। समय की दृष्टि से नाथपंथ के प्रवर्तक गोरखनाथ की वाणी को इतिहासकार 10वीं या 11वीं षताब्दी की रचना मानते हैं। इसे यदि हम मानकर चलते हैं तो संत नामदेव की रचना तथा 'बीसलदेव रासो' की रचना 13वीं षताब्दी की ठहरती है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के काल–विभाजन में आदिकाल का समय गोरखनाथ के समय से माना जाना चाहिए। इस पर हिन्दी साहित्य के विद्वानों एवं इतिहासकारों की एकमत से राय है कि 10वीं षताब्दी का अंत और 11वीं षताब्दी के प्रारंभ से हिन्दी साहित्य के उद्‌भव यानी आदिकाल का समय माना जाना चाहिए।

काल–विभाजन की बुनियादी प्रक्रिया 1. आदिकाल 2. मध्यकाल और 3. आधुनिक काल की रही है। इतिहास में भी युग के विभाजन के लिए प्रायः इतिहासकार इसी प्रक्रिया को वैज्ञानिक मानते हैं। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों के काल विभाजन को देखने–समझने के बाद हम हिन्दी साहित्य के इतिहास के समय को निम्नलिखित कालों और युगों में विभाजित कर सकते हैं–

1. **आदिकाल (वीरता की प्रवृत्ति के आधार पर इसे रामचंद्र शुक्ल ने 'वीरगाथा काल' कहा है। समय 1000 ई0 से 1400 ई0 तक)** :ष

(क) तंत्र और आध्यात्मिक साधना से संबंधित साहित्य

(ख) वीरगाथा साहित्य
(ग) अन्य विविध फुटकर रचनाएं

2. मध्यकाल (समय 1400 ई0 से 1850 ई0 तक)

मध्यकाल के अन्तर्गत हम निम्नलिखित साहित्य को रख सकते हैं :–

(क) भक्ति साहित्य : (इसे 'भक्ति युग' 1400ई0–1650 ई0 भी कहा जाता है।) :–

भक्ति साहित्य को चार खंडों में विभाजित किया गया है–

i) प्रेमाश्रयी षाखा (मुख्य कवि जायसी, मुख्य ग्रंथ– 'पद्मावत')
ii) ज्ञानाश्रयी षाखा (मुख्य कवि कबीर, मुख्य ग्रंथ– 'बीजक','साखी', 'रमैनी')
iii) कृष्णाश्रयी षाखा (मुख्य कवि सूरदास, मुख्य ग्रंथ– 'सूरसागर')
iv) रामाश्रयी षाखा (मुख्य कवि तुलसीदास, मुख्य ग्रंथ–'रामचरित मानस')

(ख) रीति शृंगार युक्त साहित्य : (रीति की प्रवृत्ति के आधार पर रामचंद्र शुक्ल द्वारा 'रीतीकाल' नामकरण किया गया है। समय 1400 ई0–1650 ई0) :–

रीतियुक्त काव्यधारा में तीन प्रकार की कविता की धाराएं मिलती हैं–

i) रीतिबद्ध काव्यधारा (चिंतामणि, भूषण, मतिराम, देव, पद्माकर आदि मुख्य हैं।)
ii) रीतिसिद्ध काव्यधारा (बिहारी, राम सहाय और विक्रमसाहि आदि)
iii) रीतिमुक्त काव्यधारा (घनानंद, आलम, बोधा, द्विजदेव, ठाकुर, षीतल आदि)

3. आधुनिक काल (समय 1850 ई0 से अबतक) :

आधुनिक काल के समय को दो भागों में बांटकर देखा गया ।

आधुनिक काल का पहला भाग (काव्य साहित्य) :–

इसके अन्तर्गत हम निम्नलिखित साहित्य को रख सकते हैं :–

(क) भारतेन्दु युगीन साहित्य (राष्ट्रीय चेतना युग 1850–1900)
(ख) द्विवेदी युगीन साहित्य (नवजागरण युग 1900–1925)
(ग) छायावाद युगीन साहित्य (सांस्कृतिक पुनुरुत्थान युग 1918–1936)
(घ) प्रगतिवादी साहित्य (यथार्थवादी लौकिक काव्य युग 1935–1945)
(ङ) प्रगतिषील साहित्य (यथार्थवादी प्रगतिषील युग 1936–1945)
(च) प्रयोगवादी साहित्य (प्रयोगवादी युग 1943)
(छ) नयी कविता या साठोत्तरी कविता (1951–1960)
(झ) सातवें दषक की कविता
(ञ) आठवें दषक की कविता
(ट) नवें दषक की कविता

(ठ) 10वें दषक की कविता
(ड) 21वीं षताब्दी के पहले दषक की कविता
(ढ़) 21वीं षताब्दी के दूसरे दषक की कविता

<u>आधुनिक काल का दूसरा भाग (गद्य साहित्य)</u> :–

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग में गद्य साहित्य का प्रवर्तन एक अद्‌भुत घटना है, जिसका आधुनिक युग में अप्रत्याषित विकास हुआ। गद्य साहित्य निम्नलिखित रूपों में विकसित हुआ–

i) हिन्दी का निबंध साहित्य
ii) हिन्दी का नाटक साहित्य
iii) हिन्दी एकांकी
iv) हिन्दी उपन्यास
v) हिन्दी कहानी
vi) हिन्दी आलोचना
vii) हिन्दी गद्य की अन्य विधाएं
viii) हिन्दी पत्रकारिता आदि।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के तहत क्रमवद्ध रूप में किया गया है। खासकर आचार्य रामचंद्र षुक्ल के काल विभाजन की पद्धति को आधार बनाने से युग के नामकरण के साथ ही उसकी प्रवृत्तिगत विषेषताओं की झलक स्पष्टतः दिखलायी पड़ने लगती है, जो साहित्य के अध्येता के लिए आवष्यक है। यों तो प्रायः इतिहासकारों ने अपने–अपने हिसाब से नामकरण के विवाद को खड़ा किया हैं, परन्तु हमें विवादों में पड़ने और उलझने के बजाय बिल्कुल सरल और सहज रूप में काल–विभाजन को देखने की जरूरत है।

दिनांक : 30/03/2020 — महेष प्रसाद सिन्हा